बचपन में संविधान : बच्चों के लिए लोकतंत्र की पहली पाठशाला

समीक्षा : प्रिया

बच्चों को संविधान पढ़ाना क्यों ज़रूरी है? अकसर यह सवाल सुनते ही लोग चौंक जाते हैं। संविधान को हम एक गम्भीर और भारी-भरकम किताब मानते हैं जिसे वयस्कों या क़ानून पढ़ने वालों के लिए ही ज़रूरी समझा जाता है। लेकिन क्या लोकतंत्र की असली बुनियाद की समझ बच्चों को छुटपन से ही नहीं मिलनी चाहिए? क्या उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि बन्धुता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और मानवीय गरिमा जैसी बातें केवल किताबों में लिखी नहीं, बल्कि ये जिए जाने वाले मूल्य हैं।

इसी दिशा में एक प्रयास है सचिन कुमार जैन की किताब *बचपन में संविधान।* यह किताब बच्चों को संविधान के नज़दीक लाने की कोशिश करती है, ताकि वे इसे बोझ न मानें, बल्कि अपने अनुभवों और संवेदनाओं से जोड़कर समझ सकें।

किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि इसमें संविधान के जटिल विषयों को कहानियों और छोटे प्रसंगों में ढालकर बच्चों की दुनिया से जोड़ा गया है। किताब में लोकतंत्र, एकता, धर्मनिरपेक्षता या बन्धुता जैसे विषय भाषणों की तरह नहीं आते, बल्कि रोज़मर्रा के क़िस्सों में उतरते हैं। भाषा सहज है, और कठिन क़ानूनी शब्दों से परे।

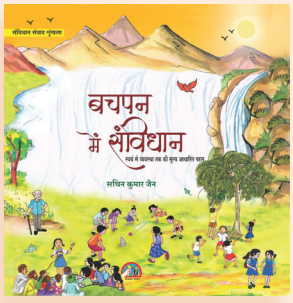

लेखक : सचिन कुमार जैन

पृष्ठ संख्या : 172

आयु वर्ग : 8 वर्ष से ऊपर

भाषा : हिन्दी

प्रकाशक : विकास संवाद समिति, भोपाल

पढ़ते हुए सबसे अच्छा हिस्सा लगता है 'आत्मचिन्तन की व्यवस्था'। हर अध्याय के अन्त में तालिकाएँ और सवाल हैं जो बच्चों को सोचने पर मजबूर करते हैं—वे ख़ुद से पूछें कि उन्होंने क्या सीखा, उन्हें क्या महसूस हुआ, और वे अपने जीवन में कौन-से बदलाव ला सकते हैं? 'मुझे महसूस हुआ!', 'बदलाव ख़ुद से', 'मेरा साहस' और 'सुनने की कला' जैसे अध्याय बच्चों में मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता और आत्मविश्वास जगाने की कोशिश करते हैं। यह स्पष्ट झलकता है कि लेखक चाहता है कि संविधान केवल पढ़ाई का हिस्सा न रहे, बल्कि विद्यार्थियों के अनुभव और व्यवहार का हिस्सा बने।

किताब का महत्त्व इस बात में भी है कि यह सिर्फ़ विद्यार्थियों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी एक मार्गदर्शक बन सकती है। किताब उन्हें यह सोचने की दिशा देती है कि संविधान जैसे गम्भीर विषयों को बच्चों तक किस तरह पहुँचाया जा सकता है।

हाँ, पढ़ते समय कुछ बातें ध्यान में रखने लायक़ भी हैं। जैसे—कभी-कभी यह साफ़ नहीं होता कि किताब सीधे बच्चों के लिए है या वयस्कों के लिए। आत्मचिन्तन तालिकाओं में पहले से तय उत्तर बच्चों की स्वतंत्र सोच को कुछ हद तक सीमित कर सकते हैं। कुछ क़िस्से क्षेत्र विशेष से जुड़े हैं जिन्हें हर बच्चा तुरन्त नहीं समझ पाएगा। साथ ही, प्रूफ़रीडिंग की छोटी त्रुटियाँ और मौलिक अधिकारों पर कम चर्चा भी खटक सकती है।

लेकिन इन बातों को आलोचना की जगह पाठक के लिए सावधानियाँ मानना बेहतर होगा। यदि शिक्षक या अभिभावक बच्चों के साथ बैठकर इसे पढ़ाएँ, तालिकाओं पर चर्चा करें, और क़िस्से-कहानियों को उनकी दुनिया से जोड़ें तो यह किताब बेहद असरदार साबित हो सकती है।

पुस्तक को पढ़ने के बाद जब कक्षा 5 के बच्चों के साथ 'लोकतंत्र' पर चर्चा की, तब अनुभव बेहद रोचक रहा। शुरुआत में 'लोकतंत्र' और 'संविधान' जैसे शब्द बच्चों के लिए कुछ धुँधले थे, लेकिन जब बात घर, विद्यालय व दोस्तों के बीच निर्णय और भागीदारी की आई तो उनके चेहरों पर समझ की चमक दिखी। बच्चों ने साझा निर्णय, सुनने की आदत और सबको मौक़ा देने जैसे कई नए पहलू

रखे। इस अनुभव से महसूस हुआ कि जब बच्चों को सही सन्दर्भ और अवसर दिए जाएँ, तो वे लोकतंत्र को केवल शब्द नहीं, व्यवहार के रूप में समझने लगते हैं—और यही इस किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी है कि यह संवाद को जन्म देती है।

कुल मिलाकर, *बचपन में संविधान* बच्चों के लिए लोकतंत्र की पहली पाठशाला बन सकती है। किताब हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि संविधान सिर्फ़ वयस्कों के लिए नहीं, बल्कि बच्चों की ज़िन्दगी का भी हिस्सा होना चाहिए। यह बताती है कि संविधान को हम क़िस्सों-कहानियों, सवालों और आत्मचिन्तन के ज़रिए बच्चों तक पहुँचा सकते हैं। यही बात इसे पढ़ने और सहेजने लायक़ बनाती है।

प्रिया उत्तरप्रदेश के नोएडा क्षेत्र में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में शिक्षण से जुड़ी हैं। वे बच्चों की भाषा, कल्पना एवं सृजनात्मकता के विकास के लिए कार्य करती हैं।

यह रंग मेरा है!

समीक्षा : शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता

यह रंग मेरा है! नाम की यह किताब प्री-स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए बहुत आकर्षक ढंग से डिज़ाइन की गई है जिसमें रंग-बिरंगे चित्र हैं। चित्रों पर आधारित यह किताब मुख्य रूप से अवधारणाओं पर केन्द्रित है और उन बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है जिन्होंने अभी तक ख़ुद से पढ़ना-लिखना शुरू नहीं किया है। किताब बच्चों को चित्रों के ज़रिए उनके आस-पास की दुनिया से परिचित कराती है। ऐसी दुनिया जिसमें वे नए शब्द, विचार और अवधारणाएँ सीखते हैं। जैसे—रंग, आकृति, संख्याएँ, समानार्थी शब्द, विलोम शब्द, आदि। इस किताब में वास्तविक दुनिया की तस्वीरें और जानकारियाँ दी गई हैं। ये जानकारियाँ उन बच्चों के मन में, जो अभी ख़ुद से पढ़ नहीं सकते, इस बात का उत्साह जगाती हैं कि वे उन चीज़ों को पहचानें जिन्हें उन्होंने पहले देखा है, या जिनसे वे जुड़े रहे हैं। यह किताब बच्चों के पास पहले से मौजूद ज्ञान को और भी मज़बूत बनाती तथा उसकी पुष्टि करती है।

लेखिका और चित्रकार : नैंसी राज
अनुवाद : सुषमा रोशन
पृष्ठ संख्या : 20
आयु वर्ग : 2-5 साल
भाषा : हिन्दी, कन्नड़ और 7 अन्य भाषाएँ
प्रकाशक : तूलिका बुक्स

बच्चे अपने आस-पास के माहौल से जानी-पहचानी चीज़ों और जीवों (जैसे—तोता, टमाटर, गाजर, जलेबी, बैंगन, कुत्ता, गाय, आदि) के रंगों के नाम सीखते हैं, और उन्हें रंगों के आधार पर समूह में बाँटने का तरीक़ा भी समझते हैं। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि चीज़ों और जीवों को कई तरीक़ों, जैसे—सजीव और निर्जीव; फल और सब्ज़ियाँ, वग़ैरह—से अलग-अलग श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जिनमें उनका रंग भी शामिल है। इस तरह, रंगों की दुनिया की खोज शुरू होती है। हर पन्ना एक नए रंग के साथ खुलता है। जब बच्चे किन्हीं ख़ास रंग की चीज़ों और जीवों के चित्रों को देखते हैं तो उन्हें उसी रंग की और भी चीज़ें जोड़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जो उन्हें अपने आस-पास दिखाई देती हैं। इससे रंगों को पहचानने की उनकी क्षमता और भी ज़्यादा मज़बूत होगी।

बच्चों के लिए लिखी गई अन्य अच्छी किताबों की तरह यह किताब भी बच्चों को जानी-पहचानी चीज़ों से अनजान चीज़ों की ओर बहुत आसानी से ले जाती है। हो सकता है कि उन्होंने अभी तक व्हेल के बारे में न सुना हो, लेकिन जब उनसे किताब के पन्ने पर बनी छोटी मछली को देखने, और उसकी तुलना में व्हेल की कल्पना एक बहुत बड़ी मछली के रूप में करने के लिए कहा जाता है तब वे आसानी से ऐसा कर पाते हैं।

उनसे यह पूछना कि क्या उन्होंने कभी किसी इल्ली (caterpillar) को चलते हुए देखा है, और फिर उन्हें चित्र में उसका मुड़ा हुआ शरीर दिखाना; ऐसा करने से हो सकता है कि कुछ बच्चे उसे एक ऐसे कीड़े के रूप में पहचान लें जिसे उन्होंने पहले देखा है। इस तरह बारीक़ियों पर ध्यान देने की यह आदत उन्हें धीरे-धीरे अपने आस-पास की चीज़ों को और भी बारीक़ी से देखना सिखा देगी। हो सकता है कि बच्चे अपनी घरेलू भाषा में इल्ली को सूँडी, डिम्भ या लार्वा जैसे किसी और नाम से जानते हों; ऐसे में, वे उस चीज़ और नाम के बीच सम्बन्ध जोड़ पाएँगे, और इस तरह नए शब्द सीख पाएँगे।

बच्चों को बोलने और कहानी से जोड़ने का एक और तरीक़ा यह है कि कोई-सा भी पन्ना खोलकर उनसे किसी चीज़ को पहचानने के लिए कहा जाए। *क्या इस पन्ने पर कोई फिरकी (pinwheel) है?* हो सकता है कि शुरू में वे 'नहीं' में जवाब दें। लेकिन जब वे ध्यान से देखेंगे तब उन्हें पता चलेगा कि पौधे पर खिले फूल असल में फिरकियाँ ही तो हैं! *ज़रा सोचो, अगर पौधों पर फिरकियाँ उगतीं तो कैसा होता? तुम क्या करते?* जब बच्चे फिरकियों को तोड़कर, उन्हें तेज़ी से घूमते देखने के लिए उनके साथ दौड़ने के बारे में सोचते हैं तब उनके सामने कल्पनाओं का संसार खुल जाता है। *लड़के के अलावा, ऐसी कौन-सी एक चीज़ है जो हर पन्ने पर मौजूद है?* सूरज। यह मूड, हाव-भाव और भावनाओं पर बातचीत शुरू करने का एक अच्छा ज़रिया बन सकता है। हर पन्ने पर सूरज का हाव-भाव अलग होता है; वह हैरानी से लेकर नाराज़गी, फिर ग़ुस्सा और आख़िर में मज़ाक़िया अन्दाज़ में बदलता रहता है। *तुमको कब हैरानी / उदासी / ग़ुस्सा / मज़ा आता है?* इस तरह के सवाल पूछने से बच्चे अपनी भावनाओं के बारे में बात करना सीखते हैं, और यह भी समझते हैं कि ऐसा करना बिल्कुल ठीक है। सूरज के बारे में इससे जुड़े कई और विषयों पर भी चर्चा की जा सकती है। जैसे—दिन का उदय कैसे होता है, और रात कैसे ढलती है; सूरज कैसे दुनिया को रोशनी से भर देता है, और उसकी ग़ैर-मौजूदगी हमें अँधेरे में कैसे डुबो देती है; आदि।

प्री-स्कूल के बच्चे इस किताब की ओर खिंचे चले आएँगे। वे बार-बार इसके चित्रों को देखेंगे, उन्हें पढ़कर सुनाई गई बातों को दोहराएँगे, और हो सकता है कि आख़िर में वे अपनी ख़ुद की कहानियाँ भी गढ़ने लगें। हर बार पन्ने पलटते समय उन्हें कुछ-न-कुछ नया देखने को मिलेगा। यानी, एक ऐसी गाजर जिसने समुद्री डाकू जैसी आँखों पर पट्टी (आई पैच) लगाई हुई है; जलेबियों से भरा एक स्कूल बैग; या फिर एक ऐसा पौधा जिस पर आइसक्रीम के कोन उग रहे हैं!

इसके चित्र इतने मज़ेदार और अनोखे हैं कि वे बच्चों को इस किताब से जोड़े रखने में ज़रूर कामयाब होंगे। ज़रा सोचिए, एक करेला सोफ़े पर आलस से पसरा हुआ है, या फिर एक व्हेल स्ट्रॉ से 'मछली' वाला शरबत पी रही है!

इस किताब को 'टोका बॉक्स टॉप साउथ एशियन बुक' का पुरस्कार मिला है, और इसे 'वैली ऑफ़ वर्ड्स' पुरस्कार के लिए बनाई गई सूची में भी शामिल किया गया था।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु की कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम की सदस्य, तथा *पाठशाला भीतर और बाहर* की सह सम्पादक हैं।